International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 02-02-2026, Accepted: 05-03-2026, Published: 20-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 116-118

छत्तीसगढ़ की उरांव जनजाति में महुआ वृक्ष का सामाजिक–आर्थिक महत्व

नीलम संजीव एक्का
समाजशास्त्र विभाग, दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचांदुर, दुर्ग, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोधपत्र मानव के जीवन यापन की एक ऐसी पुरातन पद्धति पर आधारित है जो कि वृक्ष पर मानव के बहुआयामी निर्भरता को इंगित करता है । छत्तीसगढ़ में निवासरत विभिन्न जनजातियों में से एक महत्वपूर्ण जनजाति उरांव की विविध आवश्यकताएं विशेषकर सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति महुआ वृक्ष से होती है । उरांव जनजाति की परंपरागत जीवन शैली में महुआ वृक्ष की उपयोगिता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रकृति पर मानव की निर्भरता को गहराई से रेखांकित करते हुए मानव जीवन के लिए प्रकृति की आवश्यकता और महत्ता स्थापित करने कि दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह उजागर करने का प्रयास किया गया है कि उरांव जनजाति की सामाजिक – आर्थिक सहित अन्य आवश्यकताओं कि पूर्ति महुआ वृक्ष द्वारा किस प्रकार होती है?

मूल शब्द: उरांव, जनजाति, महुवा वृक्ष, संस्कृति, परंपरा, पुरातन, महुवा दारु

भूमिका
01 नवम्बर सन 2000 को मध्यप्रदेश का पूर्वी अंचल छत्तीसगढ़ राज्य के रूप में स्थापित हुआ था। जंगलों, पहाड़ों, खनिज संसाधनों के साथ –साथ जनजातीय संस्कृति की प्रचुर संपन्नता के लिए छत्तीसगढ़ राज्य देश और दुनिया में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है वर्ष 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में 32: जनजातीय जनसंख्या है जो कि कुल 43 जनजातीय समूह में विभक्त हैं । राज्य का 44: भू–भाग वनों से आच्छादित है । राज्य के बस्तर क्षेत्र को साल वनों का द्वीप कहा जाता है । छत्तीसगढ़ में 11 वन्य जीव अभ्यारण्य (Reserve forest) एवं तीन राष्ट्रीय उद्यान (National Park) हैं । मध्य छत्तीसगढ़ के कुछ सीमित क्षेत्र को छोड़कर सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ वनों से आच्छादित है, जिनमें सबसे अधिकता साल वृक्ष की है। वन बाहुल्य छत्तीसगढ़ में साल, सागौन, सजा, बीजा, शीशम, महुआ तेंदू सहित विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष पाए जाते हैं। संयुक्त रूप से त्रिफला के नाम से प्रसिद्ध औषधीय वृक्ष हर्रा, बहेड़ा एवं आंवला यहाँ पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं। इन सभी कारणों से छत्तीसगढ़ राज्य हर्बल स्टेट के नाम से भी जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ राज्य पांच संभागों में विभक्त है सरगुजा, बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग तथा बस्तरद्य विशेषकर सरगुजा तथा बस्तर संभाग में वनों की सघनता और क्षेत्रफल ज्यादा है और इन्ही दोनों संभागों अर्थात सरगुजा और बस्तर में जनजातीय जनसंख्या की अधिकता है। यहाँ की वनों एवं पहाड़ों पर आश्रित होकर शताब्दियों से निवासरत मानव समुदाय ही जनजाति अथवा आदिवासी के नाम से जाने जाते हैं।

उरांव छत्तीसगढ़ की एक महत्वपूर्ण जनजाति है जो छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग के बलरामपुर, अंबिकापुर, सूरजपुर, जशपुर और रायगढ़ जिले में निवासरत है। छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती राज्यों झारखण्ड, उडीसा, बिहार सहित पश्चिम बंगाल, असम और अंडमान निकोबार में भी उराँव जनजाति निवासरत है। इस जनजाति के लिए 'उरांव' शब्द का प्रयोग संभवत: अन्य समुदाय के लोगों ने करना आरम्भ किया। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि ये स्वयं को 'कुरुख' कहते हैं और 1901 की बंगाल जनगणना रिपोर्ट में भी इस जनजातीय समुदाय के लिए "कुरुख ट्राइब्स" नाम का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा प्रत्येक जनजाति की अपनी पृथक भाषा होती है यथा गोंड जनजाति की भाषा – गोंडी, हल्बा जनजाति की भाषा हल्बी इसी क्रम में उरांवों या कुरुखों की भाषा–कुरुख है।

अध्ययन प्रविधि
प्रस्तुत शोधपत्र अध्ययनकर्ता के निरंतर क्षेत्रीय भ्रमण, अवलोकन, सम्बंधित जनजातीय सदस्यों से परिचर्चा, अनुभव जन्य तथ्य एवं विभिन्न लेख, प्रकाशन आदि द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है।

उरांव जनजाति में महुआ वृक्ष की उपयोगिता
उरांव जनजाति द्वारा महुआ वृक्ष के विभिन्न भागों का विभिन्न उपयोग किया जाता है जिसे तालिका क्रमांक 01 में प्रस्तुत किया जा रहा है

तालिका क्रमांक 01

क्र.	महुआ वृक्ष के उपयोगी भाग	उपयोगिताएँ
1.	फल(Fruit)	1. पका महुआ फल खाया जाता है। 2. पका महुआ फल मवेशियों के लिए भी पौष्टिक आहार के रूप में प्रयुक्त होता है।
2.	फूल(Flower)	1.सूखे हुए महुए के फूल खाने में बहुत स्वादिष्ट एवं मीठे होते हैं स्थानीय स्तर पर इसे ''आदिवासियों का किशमिश'' कहा जाता है। 2.महुए के फूल का स्वाद मीठा होता है जिसे सुखाकर विभिन्न मीठे खाद्य सामग्री/मिठाई बनाकर खाया जाता है। 3. महुए के सूखे हुए फूल के साथ इमली का बीज मिलाकर स्वादिष्ट नास्ता बनाया जाता है। 4.महुए के फूल से परंपरागत विधि द्वारा शराब बनाया जाता है। स्थानीय स्तर पर इसे ''महुवा दारु'' कहा जाता है।

3.	बीज(Seed)	1.महुए के बीज का तेल खाद्य तेल के रूप में उपयोग होता है। 2.महुए के बीज के तेल का उपयोग त्वचा तथा बालों में लगाने के लिए किया जाता है। 3.महुए के बीज का तेल का उपयोग दिया जलाने में किया जाता है। 4.महुए के बीज का तेल का उपयोग चर्म रोग के उपचार में किया जाता है।
4.	पत्ती(Leaf)	1.महुए की पत्तियों से दोना बनाया जाता है जिसका उपयोग महुआ दारु पीने या अन्य तरल पदार्थ पीने के लिए किया जाता है। 2.महुए की पत्ती का उपयोग पकवान बनाने के लिए सांचे के रूप में उपयोग किया जाता है।
5.	छाल(Bark)	1.औषधीय उपयोग में लिया जाता है। 2.महुआ वृक्ष के छाल से रस्सी बनाया जाता है।
6.	जड़(Root)	1.औषधीय उपयोग में लिया जाता है।
7.	तना (Stem)	1.दांत की सफाई के लिए दातुन के रूप में उपयोग में लाया जाता हैं।
8.	लकड़ी(Wood)	1.महुआ वृक्ष की सूखी लकड़ियों का उपयोग भोजन पकाने के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है। 2.महुए की लकड़ी से हल एवं विभिन्न कृषि उपकरण बनाए जाते हैं। 3.महुआ वृक्ष की लकड़ी का उपयोग फावड़ा,कुल्हाड़ी के बैट एवं वनोपज संग्रह के विभिन्न उपकरणों के निर्माण में किया जाता है।

सामाजिक–आर्थिक महत्व: छत्तीसगढ़ के वनांचलों में निवासरत उरांव जनजाति के लिए प्रतिवर्ष फरवरी महीने के अंतिम सप्ताह से जब महुए की फूल की खुशबू आने लगती है तब से हर्ष और उत्सव का वातावरण निर्मित हो जाता है। यह हर्ष और उत्सव का वातावरण इस प्रत्याशित खुशी के कारण उत्पन्न होता है क्योंकि लोगों को ये आभास हो जाता है कि अब महुए के फूल आने लगे हैं जिन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एकत्रित करके वे अपनी विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और अन्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे। यदि महुए का वृक्ष निजी भूमि पर है तो उसपर भूस्वामी का अधिकार होता है, और महुआ फूल एकत्रित करने के लिए वे अपने सगे सम्बन्धियों को भी आमंत्रित करते हैं। वनभूमि पर मौजूद महुआ वृक्ष के फूल का सामुहिक रूप से जंगल जाकर संग्रहण करते हैं। महुआ संग्रहण करना उरांवों में उत्सव की तरह होता है। महुआ फूल संग्रहण से सम्बंधित उरांवों में विभिन्न परंपरागत गीत प्रचलित हैं जो उरांवो की भाषा कुरुख में संग्रहण के दौरान गाया जाता है। उरांवों में महुआ फूल एकत्रीकरण की यह पद्धति इनकी सामूहिकता और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। उरांव जनजाति में महुए के सूखे हुए फूल से परंपरागत ज्ञान पद्धति द्वारा शराब बनाई जाती है जिसका उपयोग अतिथि सत्कार के लिए परोसना तथा विभिन्न उत्सवों, विवाह, पर्व या अन्य किसी खुशी के अवसर पर सामूहिक रूप से सेवन करने में किया जाता है। उरांवों की भाषा कुरुख में महुआ को 'मदगी' कहा जाता है तथा इससे बनी शराब को "मदगी अरखी " कहा जाता है। महुआ फूल से निर्मित खाद्य सामग्री परोसना उरांवों में प्रतिष्ठा एवं संपन्नता का प्रतीक होता है।

अप्रैल महीने के अंतिम सप्ताह में महुआ फूल का गिरना/झड़ना बंद होने लगता है और फल आने लगते हैं। पकने के बाद ये फल स्वत:जमीन पर गिरने लगते हैं जिन्हें एकत्रित किया जाता है जिसके बीज अलग करके संग्रहण किया जाता है। महुए का बीज उरांवों की भाषा कुरुख में 'डोंय' कहलाता है। महुआ फूल के एकत्रीकरण के सामान ही महुए के फल और बीज का भी व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एकत्रीकरण किया जाता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि महुआ एकत्रीकरण के लिए अपने सम्बंद्धियों और परिचितों को अन्य स्थानों से आमंत्रित किया जाता है और वे अतिथि के रूप में घर पर कुछ दिनों तक रहकर संग्रहण के कार्य में सहयोग करते हैं। यह परंपरा इस जनजाति की सामूहिकता और सहयोग की भावना को दर्शाती है।

महुए के फूल और बीज आर्थिक दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि स्थानीय हाट/बाजार इन्हें बेचकर आय प्राप्त किया जाता है। वर्तमान में विभिन्न वनोपजों की भांति महुआ के फूल और बीज की खरीदी के लिए सरकार द्वारा उचित व्यवस्था की गई है जिसके फलस्वरूप इस वनोपज का उचित मूल्य जनजातियों को मिलने लगा है। वनग्रामों में निवासरत उरांव जनजाति के लोग महुवा से अच्छी आय प्राप्त कर विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं। महुआ वन एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवासरत उरांव जनजाति के जीवनयापन का महत्वपूर्ण आधार होने के साथ आय का प्रमुख स्त्रोत है।

निष्कष: उरांव जनजाति की परम्परागत जीवनशैली में महुआ वृक्ष एक प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में दिखलाई देता है। उरांवों की महुआ वृक्ष पर निर्भरता न केवल सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति को इंगित करता है वरन जंगलों के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता का सन्देश भी समस्त मानव समुदाय को प्रदान करता है। वनस्पति वैज्ञानिकों का भी मानना है की महुआ एक पौष्टिक खाद्य पदार्थ होने के साथ औषधीय गुणों से परिपूर्ण वृक्ष है। स्थानीय स्तर पर उरांवों द्वारा सूखे महुआ फूल से बनाई और उपयोग की जाने वाली मादक पेय पदार्थ महुआ दारू के लिए इस जनजाति और महुआ का सम्बन्ध जाना पहचाना जाता है। इस क्षेत्र में महुआ बदनाम है दारु के लिए किन्तु वस्तु स्थिति यह है कि जनजातियों में महुआ का उपयोग केवल मादक पेय के लिए नहीं किया जाता है बल्कि महुआ के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और औषधीय उपयोग होते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इस जनजाति में शराब सेवन (महुआ दारू) एक गंभीर सामाजिक समस्या है। अत: प्रस्तुत अध्ययन यह सुझाव देता है कि शराब सेवन के दुष्परिणामों के प्रति जनजातीय समुदायों के बीच जागरूकता का प्रसार किया जाना चाहिए तथा महुआ के विभिन्न उत्पादों का समुचित प्रचार –प्रसार तथा समुचित विपणन व्यवस्था भी किया जाना चाहिए

सन्दर्भ सूची

1. Ekka, Amia and Ekka, Neelam Sanjeev (2014)– *Madhuca longifolia* var. *latifolia*: An Important Medicinal Plant used by tribes of North – East part of Chhattisgarh. *Online International Interdisciplinary Research Journal*, Vol-IV, Jan 2014 Page 227-231
2. गुप्ता,अदिति एवं चौधरी,रोहित एवं शर्मा,सत्यवर्ती(2012)–महुआ (मधुका इंडिका) बायोमास के संभावित अनुप्रयोग, अपशिष्ट और बायोमास मुल्यांकन
3. Jain S.K.and Mudgal V. 1999 – A hand book of Ethnobotany. Bishen Singh Mahendra Pal Singh 23-A, New Connaught Place , Dehradun- 228001
4. Kureel,R.S., R.Kishor, Dev Dutt & P.Ashutosh. 2009. Mahua: A potential Tree Borne Oilseed. National oilseeds & Vegetable oils Development board, Ministry of Agriculture, Govt. of India, Gurugaon. Pg. 1-21.

5. Mishra Sunita1 & Padhan Sarojini 2013 - Madhuca Lonigfolia (Sapotaceae): A Review of Its Traditional Uses and Nutritional Properties International Journal of Humanities and Social Science Invention, 2 (5) : 30-36.
6. Srirangam Prashanth, Annampelli Anil Kumarb, Burra Madhub, Yennamaneni Pradeep Kumar 2010 - Antihyperglycemic and antioxidant activity of ethanolic extract of Madhuca longifolia bark, International Journal of Pharmaceutical Sciences Review and Research,5(3): 89-94